12.15 म०प०

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव महामहिम श्री मिखाइल गोर्बाचोव की भारत यात्रा के बारे में प्रधान मंत्री का वक्तव्य

[अनुवाद]

प्रधान मन्त्री (श्री राजीव गांधी) : सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के केन्द्रीय समिति के महासचिव श्री मिखाइल गोर्बाचोव मेरे निमंत्रण पर 25 से 28 नवम्बर तक भारत की यात्रा पर आए। उनकी यह यात्रा भारत और सोवियत संघ के बीच उच्चतम स्तर पर आदान प्रदान की सुस्थापित परम्परा के अनुरूप थी। यह यात्रा हमारे द्विपक्षीय सम्बन्धों में एक महत्वपूर्ण पड़ाव थी। इससे क्षेत्रीय स्थायित्व और विश्व शांति की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान मिला।

मैंने महासचिव गोर्बाचोव से द्विपक्षीय क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के विविध विषयों पर व्यापक और गहन चर्चा की। वरिष्ठ मंत्री स्तर पर भी साथ ही साथ बातचीत चली। हमारी यह बातचीत अत्यन्त हार्दिक और मैत्रीपूर्ण वातावरण में हुई तथा पारस्परिक विश्वास और भरोसा इसकी विशेषता थी।

हमने दीर्घकालिक आधार पर अपने भावी सहयोग की रूप-रेखा पर बातचीत की। अतीत के अपने सहयोग के समृद्ध अनुभव की वजह से हम अपने द्विपक्षीय सहयोग को एक गुणात्मक उच्चतर स्तर पर उठाने के लिये नये अवसरों का पता लगाने में समर्थ हो सके। कई द्विपक्षीय समझौतों पर हस्ताक्षर किए गये। विवरण सदन की मेज पर रख दिये गये हैं। टेहरी-पन-बिजली परियोजना, बोकारों इस्पात संयंत्र का आधुनिकीकरण, नई कोकिंग कोयला खानों की स्थापना तथा पश्चिम बंगाल में तेल निकालने से सम्बद्ध परियोजनाएं आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग से सम्बन्ध समझौते की परिधि में आती हैं। इस समझौते की एक महत्वपूर्ण बात यह है कि सोवियत संघ ने इसके लिए स्थानीय लागत वित्त-विनियोजन की व्यवस्था की है। ये समझौते आर्थिक, वाणिज्यक, कौंसली और सांस्कृतिक क्षेत्रों में हमारे सम्बन्धों की बढ़ती हुई शक्ति तथा सक्रियता को प्रतिबिंबित करते हैं।

महासचिव गोर्बाचौथ और मैंने इस बात पर सहमत हुए कि आर्थिक सहयोग की विशाल अछूती क्षमता से काम लेने के लिए हमारे वाणिज्यक और आर्थिक आदान-प्रदानों की प्रक्रिया के ढांचे को नया रूप देने की जरूरत है। हमारे वित्त-मंत्री और उप प्रधान मंत्री कोमेन्तसेव इनके ब्यौरों पर काम कर रहे हैं। हमने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपने सहयोग को भी बड़े पैमाने पर आगे बढ़ाने का फैसला किया है। विकसित प्रौद्योगिकीयों के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर

अनुसंधान और विकास की परियोजनाएं तय की जा रही हैं। सोवियत समाजवादी गणतन्त्र संघ की विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष शिक्षाशास्त्री मार्चुक के नेतृत्व में एक सोवियत दल शीघ्र ही भारत की यात्रा पर आएगा और उस समय उन विशिष्ट परियोजनाओं के बारे में हमारे वैज्ञानिक के साथ बातचीत करेगा जिन पर काम किया जाएगा।

अपने क्षेत्र के सुरक्षा पर्यावरण के सम्बन्ध में मैं श्री गोर्बाचोव से बहुत लाभदायक विचार-विमर्श किया। हमने शान्ति, मैत्री और सहयोग की अपनी संधि की सतत वैधता की पुन: पुष्टि की इस यात्रा की समाप्ति पर जारी संयुक्त विज्ञप्ति से अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर दोनों देशों के दृष्टि-कोण की निकट समानता का पता चलता है। सबसे बढ़कर तो इस यात्रा से हमारे दोनों देशों के लोगों की विश्व शान्ति के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता परिलक्षित हुई है।

भारत हमेशा अहिंसा का पक्षधर रहा है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में गुट-निरपेक्ष आन्दोलन में तथा 5 महाद्वीपों के 6 राष्ट्रों की पहल के माध्यम से भी निरस्त्रीकरण और शान्ति के लिए निरन्तर काम किया है। श्री गोर्बाचौव की यात्रा के दौरान सोवियत संघ ने नाभिकीय शस्त्रों से मुक्त और एक अहिंसक संसार के समान दृष्टिकोण में भारत का साथ दिया। दिल्ली घोषणा में गांधी जी और लेनिन के आदर्शों को अभिव्यक्ति मिली है। दिल्ली घोषणा पर एक अत्यन्त महत्व-पूर्ण पहल है। इसमें ऐसे सिद्धांत प्रतिपादित हुए हैं कि अगर एक शान्तिपूर्ण भविष्य हमें चाहिए तो इन सिद्धांतों को विश्व व्यापीस्वीकृति मिलनी ही चाहिए। दिल्ली घोषणा संयुक्त राष्ट्र द्वारा एक दस्तावेज के रूप में की जा रही है। हम विश्व समुदाय से आग्रह करते हैं कि वह इस घोषणा को स्वीकार करें।

महासचिव गोर्बाचोव की भारत यात्रा एक अविस्मरणीय यात्रा थी। भारत सोवियत संबंधों के के भावी विकास और एशिया तथा विश्व की शान्ति और स्थायित्व की दिशा में दोनों देशों के योगदान में यह एक स्थायी महत्व की चीज होगी।

———

12.19 म०प०

पंजाब की स्थिति के बारे में चर्चा

[अनुवाद]

श्री एस० जयपाल रेड्डी (महबूबनगर) : मंत्री महोदय ने कहा था कि वह कल शाम 5.30 बजे तक एक विस्तृत वक्तव्य देंगे। कम से कम अब तो उन्हें वह वक्तव्य दे देना चाहिए, अन्यथा क्या हम शून्य में वाद-विवाद करेंगे ?

अध्यक्ष महोदय : वह वक्तव्य देंगे।